तर्ज-मुझे तेरी मुहब्बत का सहारा मिल

कहीं ऐसा न हो यह वक्त भी यूं ही गुजर जाए
धनी के सामने होना कहीं मुश्किल न हो जाए

1- अर्श रूहें यहां आईं,धनी का सूत कातन को
नज़र जाहेरी में उलझी हैं,छोड़ सुख अर्श बातन को
लगन पिया मिलन वाली,भरम में न बदल जाए

2- जो बिन काते उठेगी वोह,झुकी आंखों से बैठेगी
सभी रूहों में शर्मिन्दा,दुबारा दिन ये चाहेगी
मगर ऐसा नहीं होगा,कि ये दिन फिर से मिल जाए

3- किसी का कातना बेहतर, सम्भाली हाथ में पूनी
कोई जागा करे रातों,धनी से प्रीत दूनी
पिया बिन कुछ नहीं अपना,यकीं ऐसा अटल आए

4-वो जिसने देके दिल अपने,सुहाग का सूत काता है
नजर लाहूत में उसकी,वहीं सुरता को बांधा है
वो मन भायेगी दूल्हा के,जो रहनी में बदल जाए

Nijanand App